पेज क्र. १

रक्षा बन्धन की हार्दिक शुभकामनायें

करायें जो आत्मा-परमात्मा का मिलन ।
वहीं पावन पर्व कहलायें 'रक्षा बन्धन' ।

रक्षा बन्धन, ईश्वरीय सम्बन्ध ।
सुख-चैन गुंजन, दुःख-दर्द भंजन ।
ज्ञान अंजन, मधुर वचन ।
शुभ-चिन्तन, ज्ञानामृत मंथन ।
आत्म-परिवर्तन, श्रेष्ठ वर्तन ।
चरित्र भवन, जीवन मधुबन ।

यह कैसा एक विचित्र संयोग है की, १५ अगस्त के दिन हम सभी भारतवासीयों ने 'स्वतंत्रता दिन' बडे उमंग-उत्साह से मनाया और इसी महिने में हम 'रक्षा बन्धन' का विष-तोडक पर्व भी बडी आस्था से मना रहे हैं । इस पावन पर्व को केवल भाई-बहन के पवित्र रिश्ते तक सिमित न करते हुए संसार में चिरन्तन पवित्रता-सुख-शान्ति की स्थापना हेतु हम सभी मनुष्य-आत्माओं को पवित्रता के कल्याणकारी बन्धन में बन्धकर अपने परमप्रिय परमपिता परमात्मा से अविनाशी व पारलौकिक सम्बन्ध जोडने का अति-सुन्दर, मंगलमय उत्सव नहीं, महोत्सव हैं ।

यह ईश्वरीय त्योहार आपके जीवन में परमानन्द की बहार लायें, सुखों की बौछार करें, खुशीयाँ अपार बरसायें, परमात्म-प्रेम गुलज़ार करें, दिव्य-शक्ति का संचार करें, दुर्गुणों का संहार करें, बुराईयों पर तीक्ष्ण प्रहार करें, शुभ-समाचार लायें तथा परमात्मा पर मन-बुद्धि से बलिहार जाने की प्रेरणा लायें, इन्हीं शुभ-आशाओं के साथ, प्रभुप्रिय आत्मिक भाई आपको रक्षा-बन्धन महापर्व की शत-शत सस्नेह बधाईयाँ ।

ईश्वरीय सेवा में,
आपकी दैवी बहनें - ब्रह्माकुमारीज्.

रक्षा बन्धन जोडे ईश्वरीय सम्बन्ध ।
तोडे दु:ख-दर्द-अशान्ति के बन्धन ।

✻ प्रेषक ✻

ब्रह्माकुमारीज् राजयोग सेवाकेन्द्र

!--------------------------!

!   !

!   !

!--------------------------!

(अन्तर्राष्ट्रीय मुख्यालयः आबू पर्वत, राजस्थान.)

लिफाफें के उपर:

प्रति,
प्रभुप्रिय आत्मिक भाई/बहन,

✻ शुभ-भावक ✻
ब्रह्माकुमारीज्.